यूनाइटेड नेशंस

संयुक्त राष्ट्र संघ

परिचय

इस कॉमिक पुस्तक में संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशंस) से जुड़ी कई संस्थाओं के काम का सचित्र वर्णन किया गया है. इसमें सुनाई कहानियों को कई पुस्तकों, रिपोर्टों और यूनाइटेड नेशंस द्वारा ज़ारी अन्य जानकारी से उद्धृत किया गया है.

इस लोकप्रिय कॉमिक पुस्तक का हार्दिक स्वागत है. इससे बहुत से लोग यूनाइटेड नेशंस के बारे में सहज रूप से जानकारी प्राप्त कर पाएंगे. वे देखेंगे कि यूनाइटेड नेशंस अपने काम से आम लोगों की ज़िंदगी को किस तरह प्रभावित करती है. इस पुस्तक को पढ़ने के बाद शायद लोगों की यूनाइटेड नेशंस के काम के बारे में गहराई से जानने में रूचि जगेगी.

- हेर्नाने तवारेस दी सा
सूचना अधिकारी यूनाइटेड नेशंस

नोट : यह पुस्तक मूल रूप से 1950 में छपी थी.
तब से अब तक के आंकड़े बहुत अलग होंगे.

यूनाइटेड नेशंस
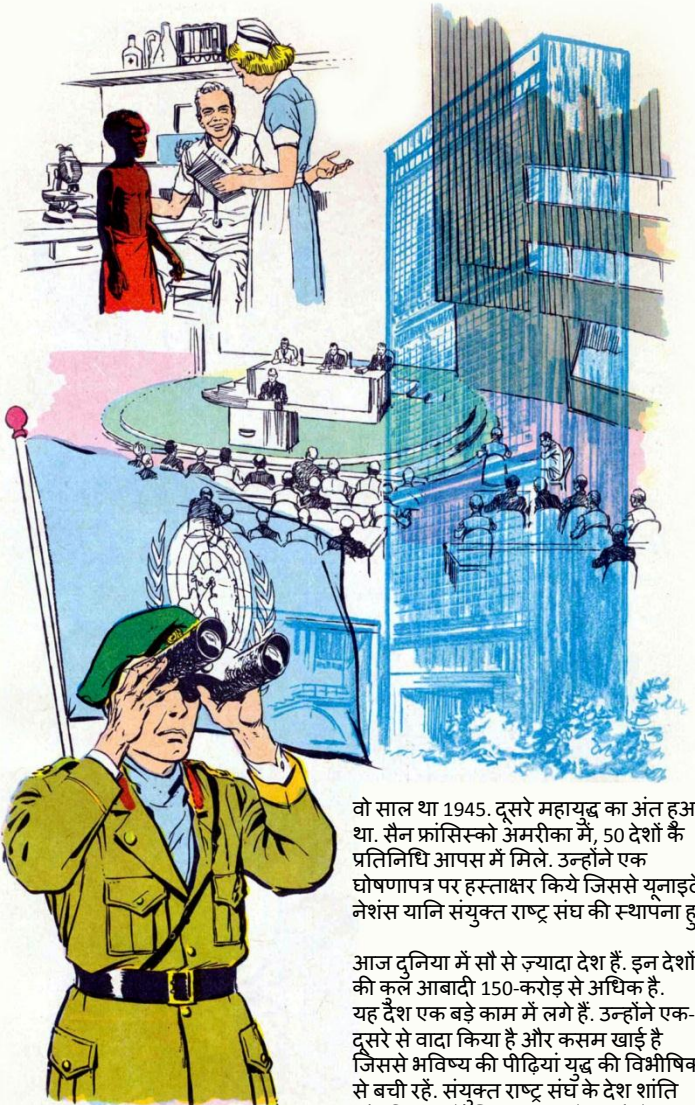
वो साल था 1945. दूसरे महायुद्ध का अंत हुआ था. सैन फ्रांसिस्को अमरीका में, 50 देशों के प्रतिनिधि आपस में मिले. उन्होंने एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये जिससे यूनाइटेड नेशंस यानि संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई.

आज दुनिया में सौ से ज़्यादा देश हैं. इन देशों की कुल आबादी 150-करोड़ से अधिक है. यह देश एक बड़े काम में लगे हैं. उन्होंने एक-दूसरे से वादा किया है और कसम खाई है जिससे भविष्य की पीढ़ियां युद्ध की विभीषिका से बची रहें. संयुक्त राष्ट्र संघ के देश शांति और विकास के लिए एक-दूसरे का कैसे सहयोग करते हैं, उन कहानियों को यहाँ सुनाया गया है.

सोलो में क्लिनिक

दूसरे महायुद्ध में, छह साल की भयानक लड़ाई के बाद इंडोनेशिया का जावा द्वीप पूरी तरह ध्वस्त हो गया था. वहां ज़्यादातर सैनिक युद्ध में ज़ख़्मी और हताहत हुए थे.

अब उन्हें कोई उम्मीद नहीं बची थी.
मैं क्या करूँ? एक हाथ वाले आदमी को कौन नौकरी देगा.

पर एक डॉक्टर उनके बारे में चिंतित था.
अगर तुम्हारे पास कृत्रिम हाथ होता तो फिर तुम उसे असली हाथ जैसे इस्तेमाल कर सकते थे.
सच में. पर मुझे वैसा कृत्रिम हाथ मिलेगा कहाँ?
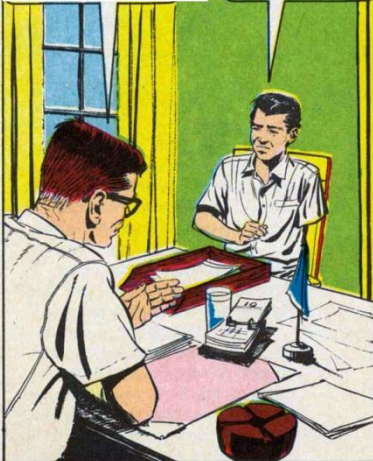
उसे मैं बनाऊंगा.

डॉक्टर कई अस्पतालों में गए.

आप विकलांग सैनिकों की मदद करना चाहते हैं. पर हमारे पास कृत्रिम अंग बनाने की जानकारी और तकनीक नहीं है.

अंत में सोलो नाम के शहर में डॉक्टर को कुछ मदद मिली.
आप अस्पताल के गेराज में वर्कशॉप शुरू कर सकते हैं.

एक इंजीनियर की सहायता से डॉक्टर ने अपना काम शुरू किया.

हमें धातु की ज़रूरत है. जो है उससे हम एक दर्जन ही कृत्रिम अंग बना पाएंगे.
इंडोनेशिया में धातु की बेहद कमी है.

हमारे सैनिकों ने जो हवाईजहाज़ मार गिराया था, क्या हम उसे तोड़कर उपयोग कर सकते हैं?

उस टूटे हवाईजहाज़ के मलबे से दोनों आदमियों ने महंगी धातु निकाली.

फिर उससे उन्होंने जल्द ही पहला कृत्रिम हाथ बनाया.

कुछ समय बाद डॉक्टर को अकेले वो काम करना बहुत मुश्किल लगा.
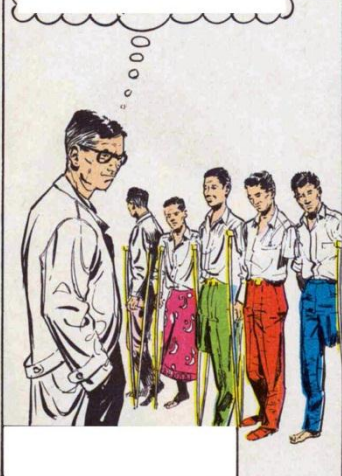
उसने अपनी समस्या इन्डोनेशिया के अफसरों को बताई.

कुछ हफ़्तों के अंदर ही यूनाइटेड नेशंस का एक्सपर्ट आ पहुंचा.
डॉक्टर, आपने बहुत अच्छी नींव रखी है

आपको नए उपकरण और आधुनिक सर्जरी वाले डॉक्टर्स की ज़रुरत होगी.

एक्सपर्ट ने इन्डोनेशिया की सरकार को एक रिपोर्ट भेजी. जल्द ही यूनाइटेड नेशंस से उपकरण और विशेषज्ञ आये, और दान में मिले धन से इन्डोनेशिया ने अस्पताल और स्कूल बनाये.

कैलिफ़ोर्निया से एक सर्जन और एक नर्स सोलो पहुंची.
.इन्डोनेशिया में 8 करोड़ लोग हैं और विकलांगों का सिर्फ एक केंद्र है. यह एक बहुत बड़ी चुनौती है.

यूनाइटेड नेशंस द्वारा भेजे सर्जन ने इन्डोनेशिया के डॉक्टर्स को ट्रेनिंग दी.
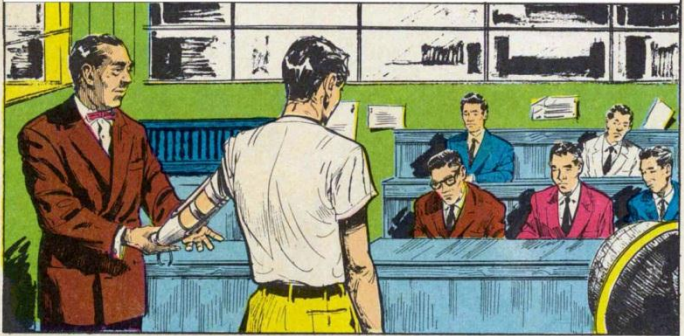
युद्ध में भाग लेने वाले सैकड़ों सैनिक वहां आये. बच्चे और महिलाएं भी आईं.
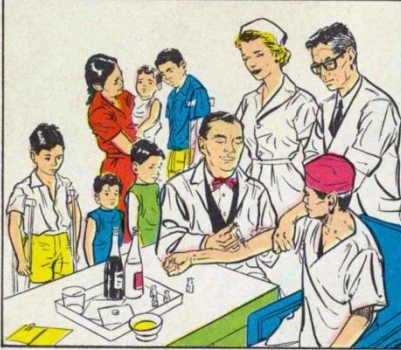
1955 में केंद्र ने अपना पहला ओपरेशन किया.

क्लास में मरीज़ों ने उपयोगी कुशलताएं सीखीं.
देश में अब विकलांग लोगों को बहिष्कृत नहीं समझा जायेगा. अब उनका अच्छा भविष्य होगा.
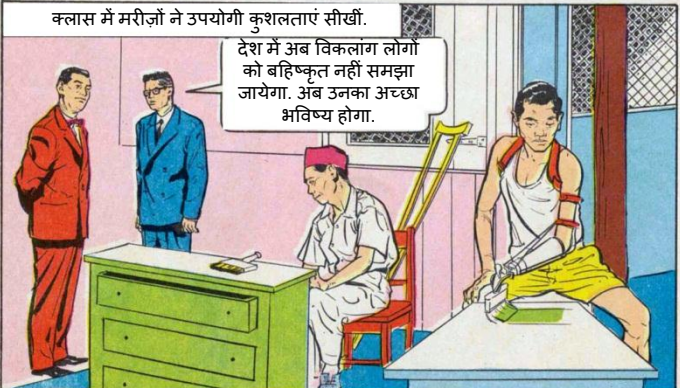
पर इन्डोनेशिया के जंगली इलाकों में लोगों ने सोलो का नाम नहीं सुना था. छुट्टी वाले दिन यूनाइटेड नेशंस का एक सलाहकार शिकार पर गया था.

शिकार के बाद वो एक गांव कम्पोंग सेलाह में ठहरे. वो वहां के मुखिया (चीफ) के मेहमान थे.

चीफ ने सलाहकार की दवाई की पेटी देखी.

सलाहकार ने उमर की जांच की. उसे पोलियो हुआ था.

सलाहकार ने सोलो विकलांग केंद्र के बारे में बताया.

देखिए, जकार्ता* में यह है
यूनाइटेड नेशंस के आफिस का
पता. आप उन्हें लिखें,.
*इन्डोनेशिया की राजधानी
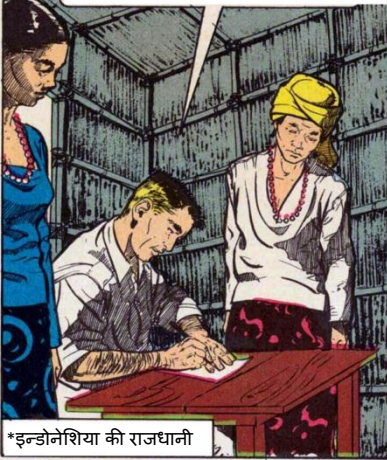
पर कम्पोंग सेलाह में कोई भी
लिखना-पढ़ना नहीं जानता था.
उसके जाने के बाद ....

हमें किसी को खोजना पड़ेगा जो
हमारे लिए पत्र लिख सके.

चीफ ने आसपास के जंगल
में कई लोगों से पूछा.

मैं सिर्फ अपना नाम
लिख सकता हूँ.

एक दिन कम्पोंग सेलाह
से कई मील दूर........

हाँ, मैं लिखना जानता हूँ.
इस तरह पत्र लिखा गया.
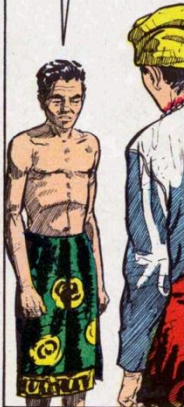
फिर पत्र भेजा गया.
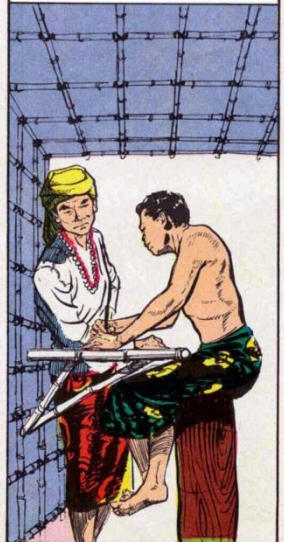
सबसे करीबी पोस्ट-ऑफिस कई मील
दूर था. वहां चिट्ठी को पैदल भेजा गया.

.... बैलगाड़ी पर भेजा गया.
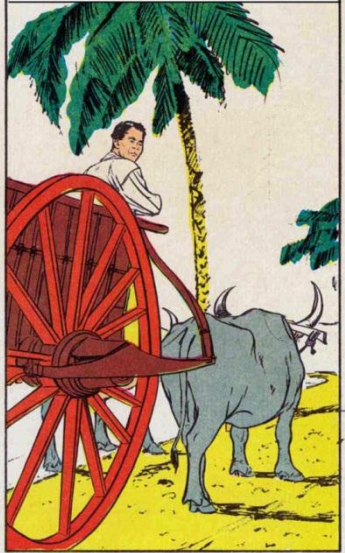
..... और नाव से भेजा गया.

दो महीने बाद यूनाइटेड नेशंस
के आफिस में वो पत्र पहुंचा.

यूनाइटेड नेशंस के आफिस ने उस सलाहकार को बुलाया जिसने उमर की जांच की थी.
लड़के को मदद के लिए उसे सोलो आना होगा

कुछ दिनों बाद सलाहकार यूनाइटेड नेशंस के आफिस में पहुंचे.
कुछ लोग और मैं मदद करना चाहते हैं. यह हैं उमर और उसके पिता के हवाई टिकट.
OCEAN

कुछ दिनों बाद उमर और उसके पिता हवाईजहाज़ में यात्रा कर रहे थे. वो पहली बार हवाई सफर कर रहे थे

सोलो में उमर के पिता ने विकलांग केंद्र को सेम का एक बोरा भेंट किया.
आपको यहाँ कुछ भी खर्च नहीं करना होगा. अगर हम भेंट नहीं स्वीकार करते तो चीफ को ठेंस लगती.

उमर के पिता कम्पोंग सेलाह लौट आये.
मेरा बेटा अच्छी जगह है. मैंने कभी भी इतने दयालु लोग नहीं देखे.

फिर, कुछ महीने बीते.
क्या उमर कभी वापिस आएगा?
धीरज रखो. इलाज में समय लगता है.

फिर एक दिन उन्होंने कम्पोंग सेलाह में एक जीप आते हुए देखी.
वो कौन है?

हमारा बेटा!

अंत में जीप रुकी. बिना किसी सहायता के उमर खुद जीप में से उतरा और फिर धीरे-धीरे चलते हुए अपने माँ-बाप के पास गया.

यूनाइटेड नेशंस, उमर जैसे बच्चों की कैसे मदद करता है? उसका उत्तर संस्था के ढाँचे में है. संस्था में अलग-अलग एजेंसियों को अलग-अलग काम सौंपा जाता है.

यूनाइटेड नेशंस के छह मुख्य अंग हैं:

जनरल असेंबली
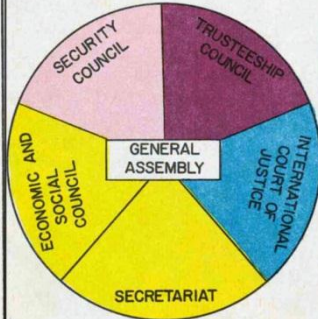
सिक्योरिटी कौंसिल
आर्थिक और सामाजिक कौंसिल
सेक्रेटेरिएट
इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ़ जस्टिस
ट्रस्टीशिप कौंसिल

जनरल असेंबली, यूनाइटेड नेशंस का केंद्र है. यूनाइटेड नेशंस के मुख्यालय में न्यू-यॉर्क सिटी में है. वहां नियमित सत्र सितम्बर में होता है. हरेक सत्र तीन महीने चलता है.
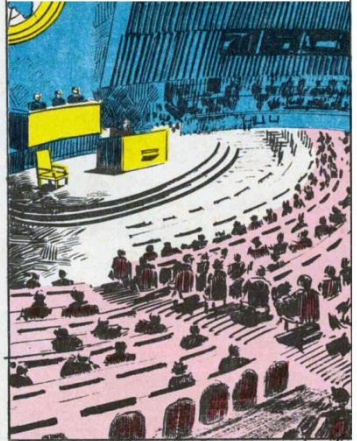
जनरल असेंबली एक ऐसा विषय चुनती है जो दुनिया के सभी लोगों की खुशहाली के लिए उपयुक्त हो.

हमें अब शरणार्थियों के बारे में चर्चा करनी चाहिए. हम उनकी कैसे मदद कर सकते हैं?
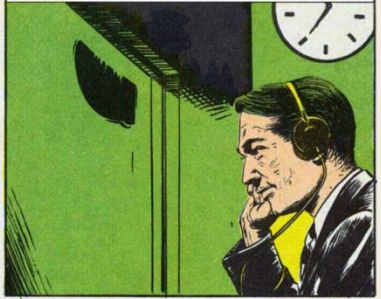
निर्णय लेते समय हर देश का एक वोट होता है. प्रमुख मुद्दों पर निर्णय के लिए दो-तिहाई बहुमत ज़रूरी है. बाकी मुद्दों पर साधारण बहुमत द्वारा निर्णय लिया जाता है.
नॉर्वे का वोट "हाँ" है.

जनरल असेंबली अहम मसलों में दखल देती है. युद्ध के बाद उसने दक्षिण कोरिया के उत्थान के लिए एक एजेंसी की स्थापना की.

एजेंसी को आर्थिक सहायता मिली जिससे वो वहां बाँध और नयी फैक्ट्रियां स्थापित कर सके, और उच्च नस्ल के जानवर ला सके.

1956 में जनरल असेंबली ने एटॉमिक एनर्जी के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए एक एजेंसी स्थापित की. एजेंसी राष्ट्रों को जानकारी और वैज्ञानिकों के आदान-प्रदान में मदद करती है.
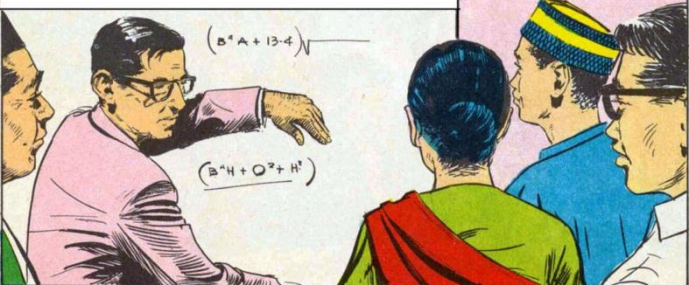
जनरल असेंबली के बाकी पांच अंग इस प्रकार हैं. आर्थिक और सामाजिक कौंसिल - गरीब, बीमार और अशिक्षित लोगों की मदद करती है.
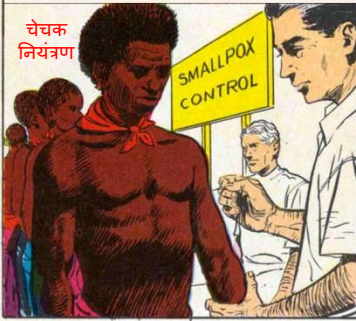
ट्रस्टीशिप कौंसिल - दुनिया के उन क्षेत्रों को सुपरवाइज़ करती है जिन्हें यूनाइटेड के नियंत्रण में है. इन क्षेत्रों में अभी उनकी सरकारें स्थापित नहीं हुई हैं.
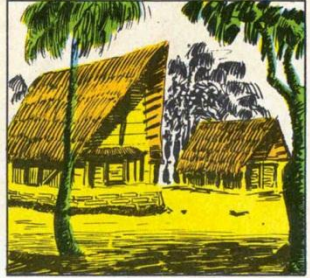
इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ़ जस्टिस - देशों के बीच कानूनी झगड़ों को निबटता है.
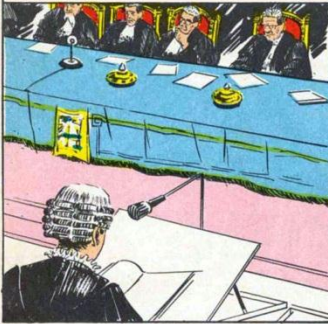
सेक्रेटेरिएट, यूनाइटेड नेशंस का प्रशासनिक कार्यभार देखती है.
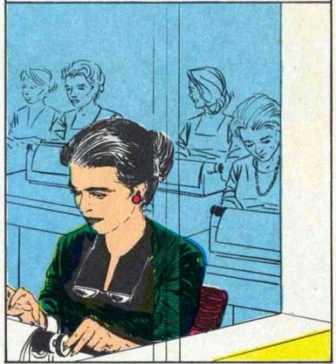
सिक्योरिटी कौंसिल का काम दुनिया में शांति बनाये रखना है.

पंद्रह देश मिलकर कौंसिल बनाते हैं. उनके पास अधिकार है कि शांति बनाये रखने के लिए वे सदस्य देशों की सेनाओं को बुला सकें.
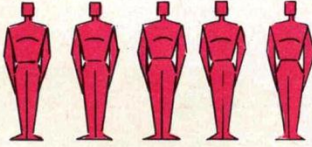
स्थाई मेंबर

चीन
फ्रांस
अमरीका
रूस
इंग्लैंड
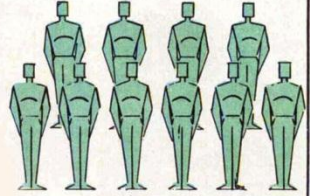
जनरल असेंबली दस मेम्बरों का चुवाव करती है, जिससे वो दो-वर्ष की अवधि के लिए सदस्य बन सकें.

कौंसिल ने कई अहम् निर्णय लिए हैं और उनके ऊपर कार्यवाही की है. 1946 में ईरान ने शिकायत की क़ि रूस के सैनिक उसकी सीमा में घुस गए थे. कौंसिल ने तुरंत उस मसले पर चर्चा की. उसके बाद रूसी सैनिकों ने ईरान को छोड़ा.
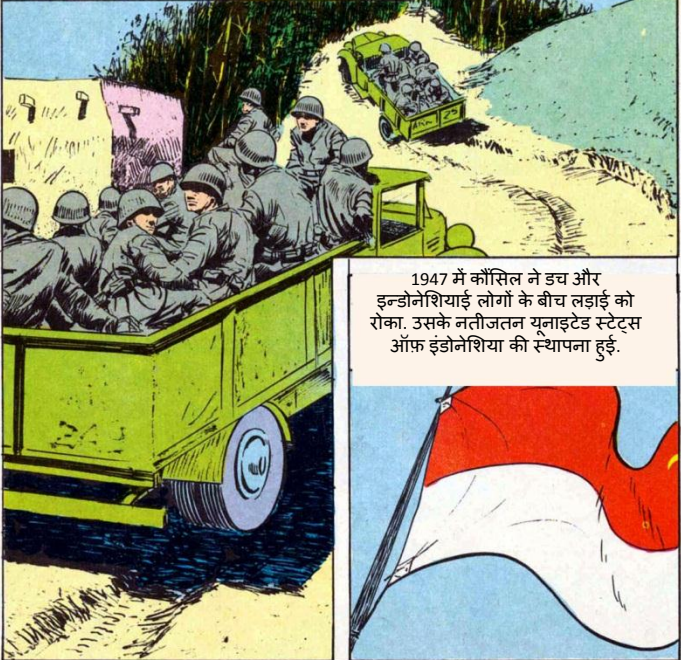
1947 में कौंसिल ने डच और इन्डोनेशियाई लोगों के बीच लड़ाई को रोका. उसके नतीजतन यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ इंडोनेशिया की स्थापना हुई.

1960 में कांगो, बेल्जियम से स्वतंत्र हुआ. पर आज़ादी के एक हफ्ते बाद ही वहां पर दंगे शुरू हो गए. तब कांगो की सरकार ने यूनाइटेड नेशंस से मदद मांगी - कि वो आकर देश में शांति स्थापित करे, देश की सुरक्षा करे और विदेशी आक्रमण से उसे बचाए.

यूनाइटेड नेशंस ने वहां सदस्य देशों की एक सेना भेजी. 1964 में यह शांति सेना - जिसमें बीस हज़ार सैनिक थे, को कांगो से हटाया गया.

वहां नागरिक सहायता का एक कार्यक्रम चलाया गया. 68 युवकों को कांगो से डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए यूरोप भेजा गया.
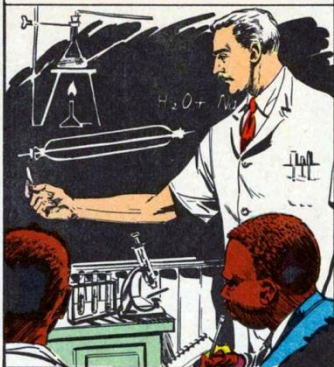
यूनेस्को स्कूल शिक्षकों की ट्रेनिंग करता है.

कृषि विशेषज्ञों आधुनिक खेती के तरीके सिखाते हैं.

1964 में यूनाइटेड नेशंस के हटने के बाद कांगो में दुबारा मुश्किलें शुरू हो गयीं.

शांति - शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के ज़रिए

यूनेस्को (यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल आर्गनाइजेशन) के लिए यह बहुत बड़ा काम है.
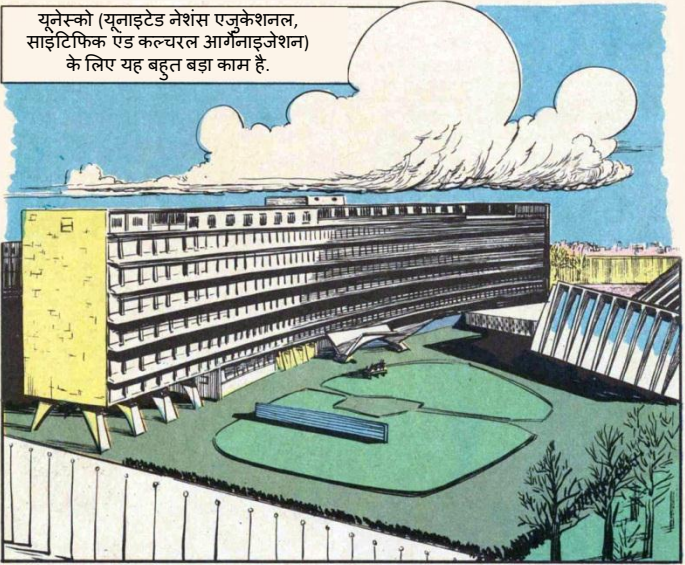
पूरी दुनिया में भूकंप नापने के स्टेशन लगाए गए हैं जिससे की बर्बादी को कम किया जा सके.

यूनेस्को, पूरी दुनिया में महासागरों के अध्ययन पर ज़ोर देता है. उसने इंडियन ओशन में रिसर्च के लिए 40 जहाज़ भेजे. यह क्षेत्र विश्व में मछलियों का सबसे समृद्ध इलाका है
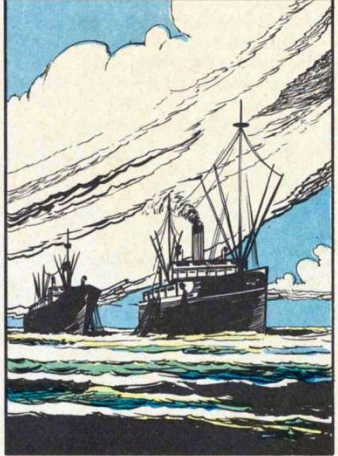
यूनेस्को ने कला की अनेकों बहुमूल्य कृतियों को संरक्षित किया है. यूनेस्को ने नूबियन रेगिस्तान में अस्वन बाँध के निर्माण के बाद पानी के बढ़ते स्तर से ऐतिहासिक स्मारकों को बचाया है.
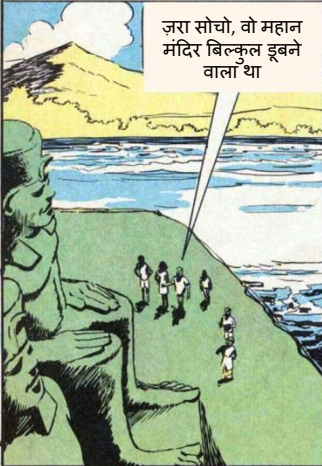
यूनेस्को ने कोलंबिया, भारत और नाइजीरिया में सार्वजानिक पुस्तकालय शुरू करने में सहायता दी है. नाइजीरिया में लोग पढ़ने के इतने इच्छुक हैं कि वहां सुबह से शाम तक लाइब्रेरी लोगों से भरी रहती है.

भूख से मुक्ति

विश्व में 300 करोड़ लोग हैं (यह आंकड़ा 1950 का है). उनमें से आधी आबादी स्थाई रूप से भुखमरी की शिकार है. दुनिया की आबादी अगले चालीस सालों में दुगनी यानि 600 करोड़ हो जाएगी. हमें भुखमरी से जमकर लड़ाई लड़नी है.

FAO (फ़ूड एंड एग्रीकल्चरल आर्गेनाइजेशन) का फ्रीडम फ्रॉम हंगर अभियान को पूरी दुनिया के लोगों को "भुखमरी" की कहानी सुनाने और उसमें मदद करने के लिए प्रेरित करता है.

उसका एक हल है समुद्र से अधिक भोजन पैदा करना

FAO का नया मोटर मुझे नाव को ज़्यादा दूर ले जाने में मदद देगा.
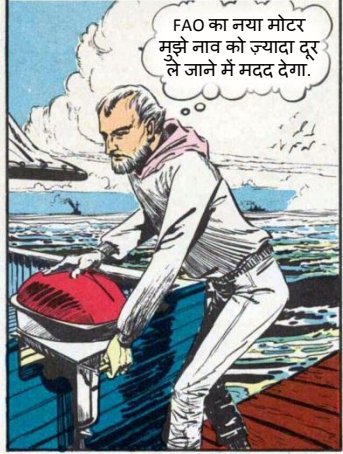
FAO के डॉक्टर मवेशियों की सुरक्षा और उनकी नस्ल बेहतर करने में मदद करते है.

आधुनिक तरीकों और तकनीकों से पैदावार बढ़ाई जाती है.
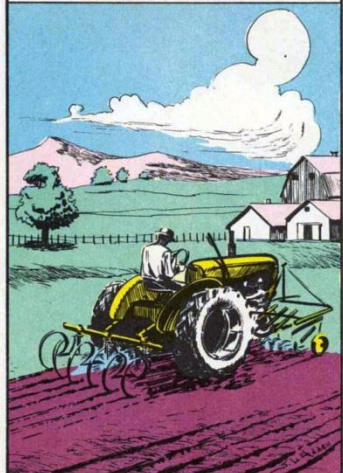
विशेष एजेंसीज

यूनाइटेड नेशंस में कई स्पेशल एजेंसीज हैं. इंटरनेशनल कम्युनिकेशन्स एजेंसी भिन्न देशों के लिए "रेडियो फ्रीक्वेंसी" तय करती है. इससे रेडियो-स्टेशन एक-दूसरे में दखलंदाज़ी न दे सकें.

यूनेस्को (यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल आर्गेनाइजेशन) अलग-अलग देशों को स्कूल सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में मदद करती है. वो विज्ञान ने प्रचार-प्रसार में भी मदद करती है और देशों को एक-दूसरे को समझने में भी मदद करती है.

इंटरनेशनल सिविल एविएशन संस्था उड़ान में सुरक्षा हवा में सुरक्षा और बेहतर उड़ान की तकनीकों पर काम करती है.

यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन, एक देश से दूसरे देश में चिट्ठियों को भेजना आसान बनाती है. वो डाक को तेज़ी से भेजने का काम करती है.

वर्ल्ड मेट्रोलॉजिकल आर्गेनाइजेशन समान मापदंड इस्तेमाल करने पर ज़ोर देती है और देशों से उनका मौसम रिपोर्ट करने की अपील करती है.

FAO (फ़ूड एंड एग्रीकल्चरल आर्गेनाइजेशन) देशों को फसल की उपज बढ़ाने में - खेती, मछली और जंगल उत्पादन बढ़ाने में मदद करती है.
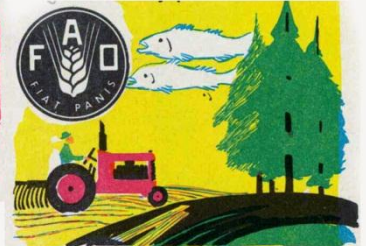
इंटरनेशनल मोनेटरी फण्ड एक देश को, दूसरे देश की करेंसी में पैसे भुनाने में मदद करती है.

इंटरनेशनल बैंक फॉर रिकंस्ट्रक्शन एंड डेवलपमेंट विकासशील देशों को विकास के लिए संसाधन उपलब्ध कराती है. इंटरनेशनल डेवलपमेंट एजेंसी का इसी बैंक के साथ सम्बन्ध है.

इंटरनेशनल फाइनेंस कारपोरेशन पिछड़े इलाकों में उद्योग और व्यापार को बढ़ावा देने का काम करती है.

वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन दुनिया भर में बीमारियों से लड़ने और लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का काम करती है.

इंटर-गवर्नमेंटल मेरीटाइम कंसल्टेटिव आर्गेनाइजेशन शिपिंग क्षेत्र की समस्याओं और सुरक्षा से सम्बन्ध रखती है.

इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी आणविक ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग पर बल देती है.
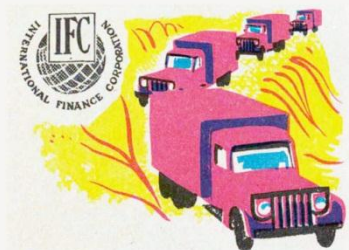
सेहत सेना

सबके लिए बेहतर सेहत यह यूनाइटेड नेशंस का लक्ष्य है. सभी देश इस संस्था के सदस्य हैं. यह संस्था बीमारी से लड़ती है. कुछ वर्ष पहले उसने मलेरिया के खिलाफ युद्ध अभियान छेड़ा. मलेरिया गर्म देशों में मच्छर के काटने द्वारा फैलता है.
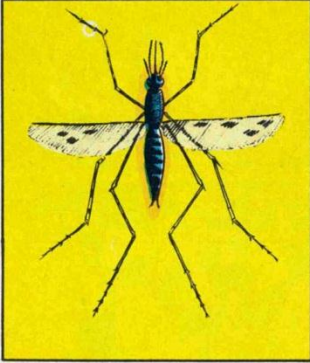
मेक्सिको और अन्य देशों में लोगों की सेहत सेना ने दूर-दराज़ के इलाकों में जाकर मच्छरों पर ज़हरीली दवा छिड़की.

मच्छर-मार सेना घोड़ों पर सवार होकर पहाड़ी इलाकों में गई और वहां उसने मच्छर मारने का अभियान चलाया.
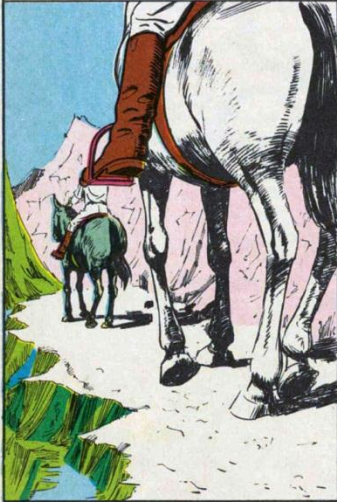
गांव के लोगों को इस अभियान के बारे में बताया गया.
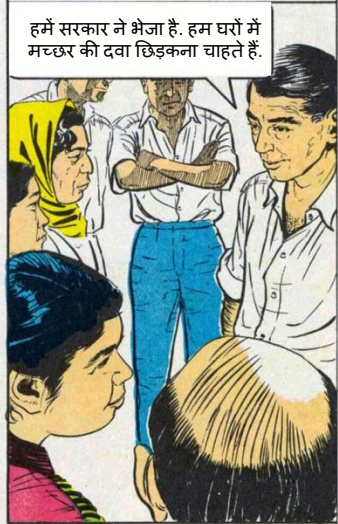
कुछ लोगों ने विरोध भी किया.
ज़हर से लोग भी मर सकते हैं!

कृपा हमें काम करने दें. यही एक तरीका है मच्छर मारने का और मलेरिया से छुटकारा पाने का. पूरी दुनिया में हर साल मलेरिया से लाखों लोग मरते हैं.

मच्छर मार ब्रिगेड एक घर से दूसरे घर गई. उन्होंने घर में छिड़काव करने से पहले सारा फर्नीचर बाहर निकाला.

छिड़काव ख़त्म करने के बाद. ..
हमें अब दूसरे गांव जाना है. पर हम कुछ महीनों के बाद दुबारा आपके घर में छिड़काव करने आएंगे

ईरान में मच्छर मार ब्रिगेड को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा. उन्हें कुर्दिस्तान जिले में घुमन्तु जनजातियों को खोजना पड़ा.
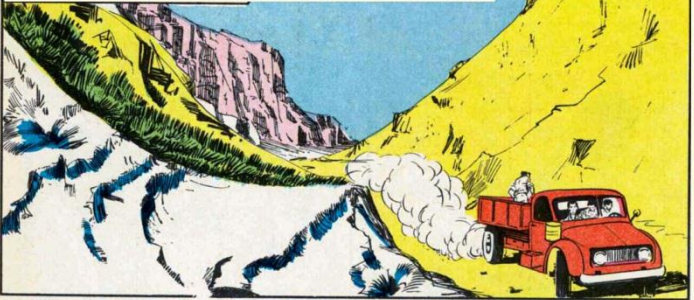
मौसम बदलने के साथ यह जनजातियां ईरान, ईराक, टर्की और सीरिया के सीमावर्ती इलाकों में घूमती रहती हैं.

कई बार मच्छर मार ब्रिगेड को इन जनजातियों को खोजने में सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ी.

यह बहुत मुश्किल काम था. कुर्द जनजाति की संख्या कोई 30 लाख थी. परन्तु उन्होंने हरेक को खोजकर निकाला. उनके घरों, तम्बूओं, घोड़ों, और भेड़ों पर भी दवाई छिड़की.

वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन ने मच्छरों द्वारा नुक्सान को दिखाने के लिए लाखों पोस्टर छापे. स्कूल में बच्चों को मलेरिया की बीमारी के बारे में बताया गया.
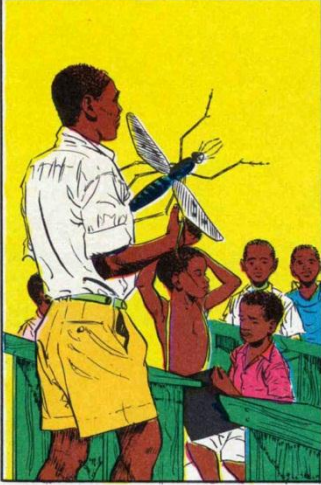
यह एजेंसी अन्य बीमारियों के साथ भी लड़ती है. एशिया और अफ्रीका में डॉक्टर्स की टीम्स एक जानलेवा बीमारी "याज" से बचाने का काम कर रही हैं.

हज़ारों लोगों को आँख की बीमारी ट्रेकोमा होती है, जिसके कारण वे अंधे हो सकते हैं. एजेंसी इस बीमारी से मुक्ति के लिए भी संघर्षरत है.

ट्यूबरक्लोसिस या क्षयरोग पर भी इस संस्था ने महत्वपूर्ण काम किया है. इस बीमारी से बचने के लिए बहुत से लोगों को टीके दिए जा रहे हैं. वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन के काम के कारण भविष्य में विश्व अधिक सेहतमंद बनेगा.
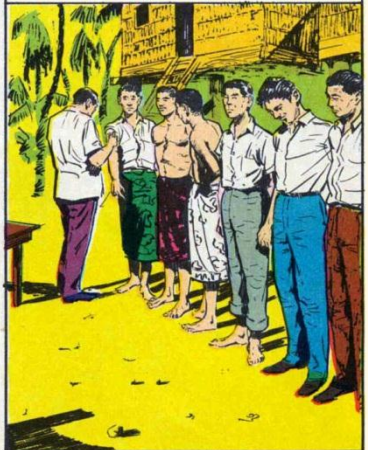
चाभी

"आप जीवन में सबसे ज़्यादा क्या चाहेंगे?" एक शरणार्थी से पूछा गया. "चाभी," शरणार्थी ने उत्तर दिया. "एक दरवाज़े की चाभी जिसके पीछे मैं अपने परिवार के साथ सुरक्षित रह सकूं और जिसे मैं घर कह सकूं."

1945 में दूसरे महायुद्ध के समाप्त होने के बाद लाखों लोग बेघर हो गए थे. उनका कोई देश नहीं था.

उनके पास रहने को कोई स्थान नहीं था. क्योंकि युद्ध में लाखों घर तबाह हुए. जो मकान अभी भी खड़े थे उनमें स्थानीय लोगों की भीड़ लगी थी.

फिर शरणार्थियों को जहाँ कहीं कोई घर मिला वो उसमें बस गए. खाली सेना के बैरक, पुराने कंसंट्रेशन कैम्प्स, बम्ब से ध्वस्त इमारतें. लाखों लोगों ने लकड़ी और गत्ते के डिब्बों से अपने लिए झुग्गी-झोपड़ियां बनायीं.

शरणार्थियों को कोई निजिता या गुप्तता उपलब्ध नहीं थी. कभी-कभी एक कमरे में दो-तीन परिवार इकट्ठे रहते थे.

महायुद्ध के बाद यूनाइटेड नेशंस ने शरणार्थियों की ज़िंदगी को सुधारने के लिए कई कार्यक्रम चलाये. उसके बाद शरणार्थियों की लगातार मदद के लिए यूनाइटेड नेशंस ने 1951 में हाई कमिश्नर फॉर रेफ्युजीस की स्थापना की. हाई कमिश्नर का ऑफिस स्थानीय सरकारों की मदद से शरणार्थियों को बेहतर जीवन जीने में मदद करता है.

एक नई ज़िंदगी

दूसरे महायुद्ध के बाद जब शरणार्थियों ने अपनी झुग्गी-झोपड़ियां बनाईं तब वे उनमें ज़्यादा दिन नहीं रहना चाहते थे.
आपको वहां कुछ दिन ही रहना होगा. हम आपके लिए एक नया घर ढूंढेंगे.

अधिकांश शरणार्थियों को नए घर मिले भी. पर कुछ देश ऐसे भी थे जो शरणार्थियों को अपने यहाँ नहीं रखना चाहते थे
इस आदमी को टी. बी. है. हमारे देश के नियम ऐसे लोगों को शरण की अनुमति नहीं देते.

पर अब उसकी टी. बी. पूरी तरह ठीक हो गई है. उसका बाकी परिवार भी स्वस्थ्य है
मुझे माफ़ करें. हम उस आदमी को नहीं ले सकते. पर उसका परिवार अगर चाहे तो आ सकता है.

कई परिवारों को टूटना पड़ा, तभी उन्हें नए देश में रहने की अनुमति मिली.
नहीं थॉमस, हम तुम्हारे बिना नहीं जायेंगे. हम यहीं कैंप में तुम्हारा इंतज़ार करेंगे.

बच्चों को माता-पिता को छोड़कर जाना पड़ता था.
माँ, मैं मेहनत करूंगा. मेरे पास काफी पैसे होंगे जिन्हें मैं तुम्हारे लिए भेजूंगा.

इस तरह सालों बीते. हज़ारों शरणार्थी कैम्प्स में पड़े रहे. वो उपयोगी हो सकते थे इस बात को वो लगातार साबित करते रहे.
काश कोई ऐसा देश होता जो हमें लेता. मैं अभी भी मज़बूत हूँ. मैं अभी भी कई सालों तक मेहनत कर सकता हूँ.
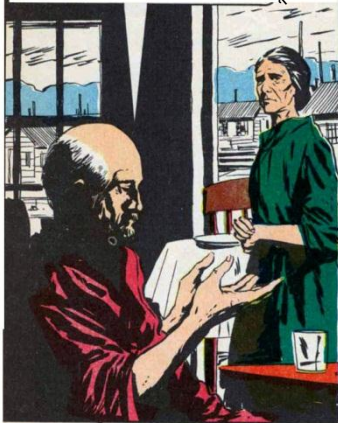
कुछ शरणार्थियों को नौकरी ज़रूर मिली पर उनकी ज़िंदगी अभी भी कठिन थी.
मैंने तुम्हारे लिए एक फैक्ट्री में मैकेनिक की नौकरी ढूंढी है. तुम्हें कैंप में हीरहना होगा, क्योंकि वहां रहने की कोई जगह नहीं है.

शरणार्थियों की समस्याओं से अवगत कराने के लिए यूनाइटेड नेशंस ने जून 1959 में "वर्ल्ड रिफ्यूजी वर्ष" शुरू किया.
अभी भी हज़ारों शरणार्थियों को मदद की ज़रुरत है. जो बच्चे शरणार्थियों शिविरों में पैदा हुए हैं, उन्होंने कभी और कोई ज़िंदगी देखी ही नहीं है.
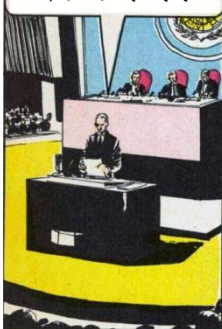
दुनिया के बहुत से देशों ने शरणार्थियों के पुनर्निवास के लिए धन और साधन दान किए. कुक द्वीप ने 45,000 डॉलर इकट्ठे किये.

कुल मिलकर 9 करोड़ डॉलर इकट्ठे हुए. इनमें से 1.4 करोड़ डॉलर हाई कमिश्नर फॉर रेफ़ुजीस के ऑफिस को मिले.
अब हम यूरोप शरणार्थियों के शिविरों को हटा पाएंगे. उससे जो पैसा बचेगा उससे हम अन्य कार्यक्रम शुरू करेंगे.

कुछ देशों ने अपने सख्त नियमों में कुछ नरमी लाई. उन्होंने बूढ़े और अपंग शरणार्थियों को रहने की अनुमति दी.
जोरो लिम्प्स को देखो! वो अच्छा ड्राफ्ट्समैन है, और विकलांगता उसके काम में कहीं आड़े नहीं आती है.

मिसेज़ क्लॉस को डाक्टरी सहायता की ज़रुरत है. परिवार के सदस्यों को नौकरी पर उनकी ख़ुशी-ख़ुशी देखभाल करेंगे.

जो लोग बहुत वृद्ध या बीमार थे, उन्हें वृद्धाश्रमों में रखा गया. वहां उनकी पूरी ज़िंदगी, अच्छी देखभाल होगी.

शरणार्थी नाविकों के अधिकारों की गारंटी पर भी समझौते हुए.
मैंने 15 भिन्न देशों के झंडों वाले जहाज़ चलाये हैं. अब मुझे ज़मीन पर काम का मौका मिला है. मेरे पास पहले कभी भी सही कागज़ात नहीं थे.

शरणार्थियों को अपना छोटा धंधा या उद्योग शुरू करने के लिए छोटे क़र्ज़ दिए गए. एक आदमी जिसने अर्ज़ी दी वो बहुत बूढ़ा था और वो दूसरे देश में नहीं जा सकता था.

नॉर्बर्ट का धंधा बहुत अच्छा चला.

नॉर्बर्ट तुम क़र्ज़ समय से पहले लौटा रहे हो.

उस क़र्ज़ के बिना मैं अभी भी शरणार्थियों के शिविर में होता. किसी और ज़रूरतमंद को उसका फायदा पहुंचेगा.

एक दिन यूनाइटेड नेशंस का एक अफसर नॉर्बर्ट से उसकी वर्कशॉप में मिलने आया.

यूनाइटेड नेशंस के क़र्ज़ के कारण एक बूढ़ा आदमी जो किसी अन्य देश में नहीं जा सकता था एक प्रसिद्ध कारीगर बना. उसका धंधा बढ़ा और जल्द ही कई अन्य शरणार्थी उसके यहाँ काम करने लगे.

ज़्यादातर शरणार्थियों का उन्हीं देशों में पुनर्निवास किया गया जहाँ उनके शिविर थे. कभी-कभी यूनाइटेड नेशंस ने शरणार्थियों के लिए पक्के मकान बनाने के लिए धन भी दिया. ऑस्ट्रिया के कैंप ट्राल्फलाच में शरणार्थियों को घर मिले.

धीरे-धीरे बिल्डिंग ऊपर उठी. शरणार्थियों ने निर्माण के हरेक चरण को गौर से देखा.

अंत में नए घरों में जाने का समय आया. शरणार्थियों ने अपने सामान को ट्रकों में भरा और फिर वे नई बिल्डिंग की ओर गए.

नए घरों के फर्नीचर को दुनिया भर के लोगों ने दान दिया. बाकी धन, यूनाइटेड नेशंस कमिश्नर फॉर रेफ़ुजीस ने क़र्ज़ के रूप में दिया.

जब शिविर खाली हुए तब शरणार्थियों ने अपने पुराने कैंप ट्रॉल्फलाच को ध्वस्त होते हुए देखा. दस सालों तक वो उनका घर था पर अब उसे उखाड़ा जा रहा था.

1952 से 1959 के सात सालों में 4665 विकलांग शरणार्थियों और उनके परिवारों का स्थाई रूप से पुनर्निवास हुआ था. वर्ल्ड रिफ्यूजी साल में ही 4000 विकलांग शरणार्थियों को उनके 3000 परिवार सदस्यों के साथ पुनर्वासित किया गया.

तकनीकी विशेषज्ञ

अब यूनाइटेड नेशंस के तमाम विशेषज्ञ दुनिया के कई देशों में लोगों की सहायता कर रहे हैं. दक्षिणी अमरीका के जंगलों में एक एक्सपर्ट छोटी नाव से यात्रा कर रहा है जिससे वो लकड़ी के लट्ठों को ट्रांसपोर्ट करने का कोई बेहतर तरीका खोज सके.

साउथ पसिफ़िक के एक छोटे से द्वीप में एक कृषि विशेषज्ञ मिट्टी की जांच कर रहा है और स्थानीय लोगों बेहतर फसलें उगाना सिखा रहा है, जिससे वे लोग कभी भूखे न रहें.

वो विशेषज्ञ, यूनाइटेड नेशंस में कैसे पहुंचा?

1949 में यूनाइटेड नेशंस ने एक कार्यक्रम शुरू किया - एक्सपैंडेड प्रोग्राम फॉर टेक्निकल असिस्टेंस. उसके बाद विकासशील और गरीब देशों की सरकारों ने यूनाइटेड नेशंस को अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञों को भेजने की मांग शुरू की. एक साल श्रीलंका ने मशीनों से लकड़ी का काम करने वाले एक विशेषज्ञ की मांग की. पेरू ने एक मौसम वैज्ञानिक की मांग की जो उनके यहाँ मौसम की भविष्यवाणी करने वाले स्टेशन स्थापित कर सके. इजराइल ने ऑफिस के मैनेजमेंट के विशेषज्ञ की मांग की.

यह विशेषज्ञ कहाँ से आये?

यूनाइटेड नेशंस इन विशेषज्ञों को यूनिवर्सिटीज, सरकारी विभागों, उद्योगों, और प्रोफेशनल एसोसिएशन के ज़रिये चयन करती है.

चुने जाने के बाद इन विशेषज्ञों की डॉक्टरी जांच होती है, क्योंकि उनमें से कई को बहुत अलग भोजन खाना पड़ेगा, उनकी सेहत को खतरा होगा, और दूर-दराज़ देशों की यात्रा करने में भी उन्हें खतरा उठाना पड़ेगा. पर इन तमाम खतरों के बावजूद, यह विशेषज्ञ अपने ज्ञान को दूर-दराज़ के देशों में लेकर जाते हैं. इससे पिछड़े देशों का विकास होता है और विकसित देश अपने ज्ञान और तकनीकों को विकासशील देशों के साथ बांटते हैं.

प्रकाश की किरण

इन देशों की कई सरकारों ने यूनाइटेड नेशंस से अंधे लोगों के लिए ट्रेनिंग की मांग की है. इजिप्ट (मिस्त्र) में गए एक विशेषज्ञ ने अपने अनुभवों को इन शब्दों में व्यक्त किया :

फरवरी 1953 में मैं कैरो (काहिरा) पहुंचा. वहां पर सरकार ने एक ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट शुरू की थी जो नेत्रहीन लोगों के टीचरों को प्रशिक्षित करती. वो एक बड़ी, सुन्दर और हवादार इमारत थी पर बिल्कुल खाली थी.
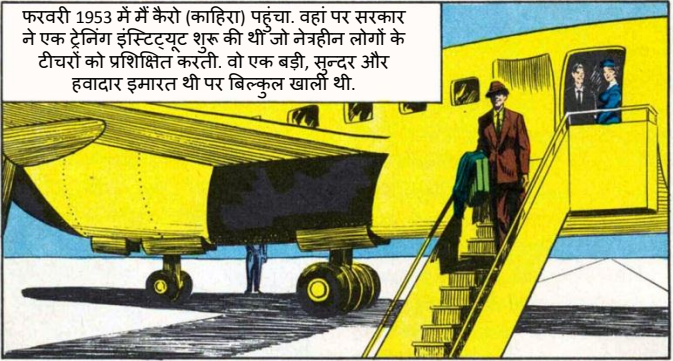
पहले कुछ हफ़्तों में मैं बहुत दुखी हुआ. बहुत से नेत्रहीन लोग मेरे कमरे में आते और मुझसे उन नौकरियों की मांग करते, जो मैं उन्हें नहीं दे सकता था.

मुझे माफ़ करें. पहले मैं उन लोगों को ट्रेनिंग दूंगा जो आपको अपने हाथों से काम करना सिखाएंगे.
आपको उससे बहुत फायदा होगा.

"पतझड़ तक हमने काफी टीचर्स को ट्रेनिंग दी. अब हम वहां पर एक होम टीचिंग ऑफिस खोल सकते थे. हमने उस सरकारी इमारत के किचन में वो आफिस खोला.

"वहां के होम टीचर्स ने दीवारों और फर्श को रगड़कर साफ़ किया. फिर उन्होंने स्टूल्स और मेज़ों की मांग की. अब वो एक खुशहाल जगह बन गई थी.

"जल्द ही वो टीचर सौ से ज़्यादा नेत्रहीन लोगों की सहायता कर रहा था. वो उन्हें हैंडीक्राफ्ट्स बनाना और नेत्रहीनों के पढ़ने-लिखने की "ब्रेल" लिपि सिखा रही थी.

"कुछ ही दिनों में उस टीचर के छात्र टोकरियां और चटाइयां बनाकर बेंचने लगे. यह पहला अवसर था जब उन्होंने अपने हाथों से मेहनत करके कुछ कमाई की थी.

"हमने वहां पर नेत्रहीन लड़कों के लिए एक
"मॉडल" स्कूल स्थापित किया जिससे वे
अंधे लड़के शिक्षित नागरिक बन सकें.
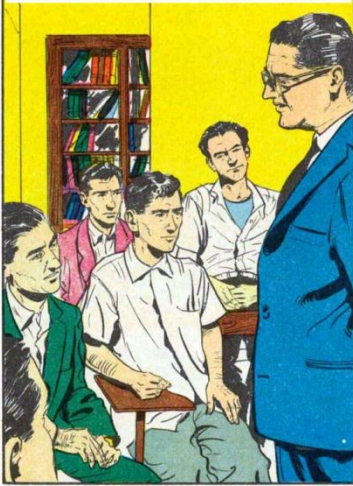
"आज उस सेंटर में एक छापाखाना है
जहाँ नेत्रहीन लोगों के लिए "ब्रेल" में
किताबें और पत्रिकाएं छपती हैं.

"मिस्त्र छोड़ने से पहले मुझे कुछ
नेत्रहीन लोगों ने अपनी साप्ताहिक
बैठक में बुलाया. उनके टीचर्स ने हमें
चाय और नाश्ता दिया.
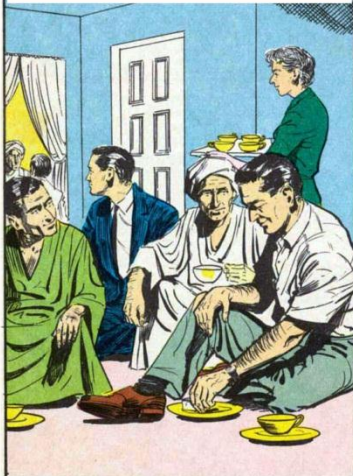
"एक आदमी ने वायलिन बजाया. यह
लोग वहां घंटों मिलकर आपस में
बातचीत करते हैं. अब उनमें अंधेपन का
डर और अकेलापन निकल गया था.
उनकी अँधेरी ज़िन्दगी में अब दोस्ती का
चिराग जल रहा है."

प्रेमदासा के लिए घर

यूनाइटेड नेशंस के एक ऑस्ट्रेलियाई विशेषज्ञ ने श्रीलंका के युवा प्रेमदासा के जीवन में प्रेम की एक किरण जगाई. उनकी विशेषता कम-लागत के घर बनाने में थी. उन्होंने अपनी कहानी को इन शब्दों में सुनाया :

"आठ साल की उम्र तक प्रेमदासा एक छोटे खेत में रहता था. उसके परिवार के पास एक गाय और एक भैंस थी. उनकी ज़िंदगी अच्छी तरह चल रही थी.
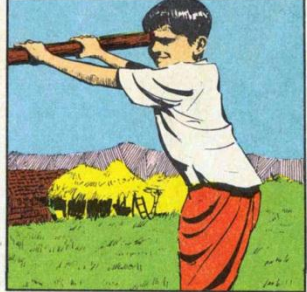
"फिर युद्ध शुरू हुआ और उसके पिताजी लड़ाई के मैदान में चले गए. तब से प्रेमदासा, उसकी माँ और बहनों के लिए ज़िंदगी मुश्किल हो गयी.

"उसके पिता युद्ध में मारे गए. फिर प्रेमदासा अपने परिवार के साथ दादा-दादी के साथ जाकर रहने लगा. अक्सर उन्हें खाने को बहुत कम मिलता था.

"प्रेमदासा को श्रीलंका के सबसे बड़े शहर कोलोंबो के एक घर में एक नौकरी मिली.

"फिर वो इस तरह के छोटे-मोटे काम करता रहा. सत्रह साल की उम्र में वो एक होटल में वेटर बना. बहुत मेहनत करके उसने कुछ पैसे बचाये.
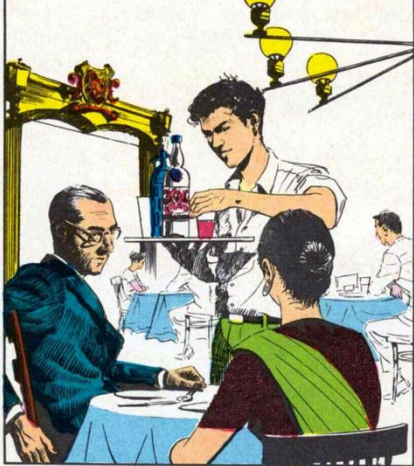
"उसने सोचा एक टैक्सी का मालिक बनेगा. फिर उसने ड्राइविंग सीखना शुरू की. एक चालाक आदमी ने उससे तीन गुना फीस ली, पर लाइसेंस मिलने से पहले ही वो वहां से भाग गया.
वो भाग गया. चालबाज़!
DRIVING SCHOOL
CLOSED

"एक दिन प्रेमदासा की भेंट सोमी से हुए. दोनों ने शादी की और फिर एक टूटी झुग्गी में रहने लगे, जिसमें पहले ही एक दंपत्ति रहता था.
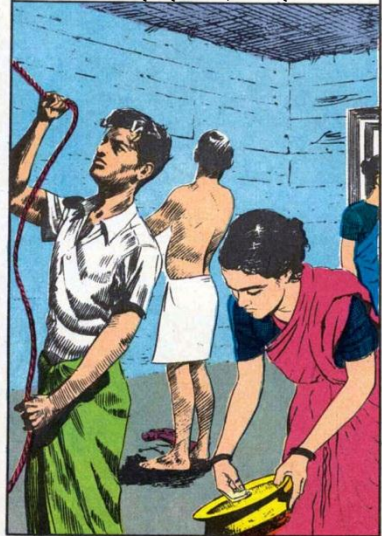
"उसके बाद सोमी बीमार पड़ गई. प्रेमदासा की सारी बचत, इलाज पर खर्च हो गई.
वो ठीक हो जाएगी, पर तुम्हें कोई बेहतर घर खोजना होगा.

"उस समय मैं में कम-लागत के मकानों के विशेषज्ञ के रूप में काम कर रहा था. मैं राज-मज़दूरों को सस्ते, अच्छे घर बनाना सिखाता था, जिनकी दीवारें मिट्टी को ठोक-ठोक कर बनाई जाती थीं.

"प्रेमदासा ने नए घरों के बारे में सुना. वो और सोमी उन्हें देखने आये.
यह तो बढ़िया घर है. ज़रूर महंगा होगा.
महंगा नहीं है. तुम्हें किश्त चुकानी होगी और फिर कुछ सालों में यह घर तुम्हारा हो जायेगा.
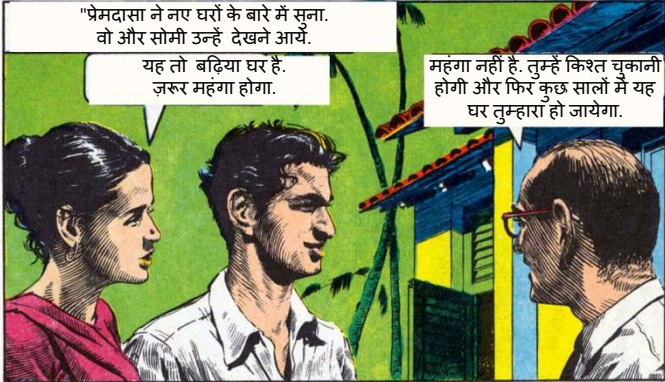
"वो मकान अब उनका घर है. आखिर में वे एक अच्छे साफ़-सुथरे घर में रहने गए.

"नए घर से प्रेमदासा का आत्म-सम्मान जगा. एक शाम उसने सोमी को अपनी योजना के बारे में बताया.
मुझे पता नहीं था कि अच्छा घर इतना महत्वपूर्ण होता है.

सोमी, मैं इस प्रकार के सस्ते घर बनाने का काम करना चाहता हूँ.

"अब प्रेमदासा, श्रीलंका में कम-कीमत के घर निर्माण करने का काम करता है.
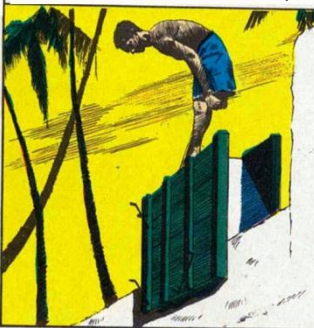
"हर बार जब वो किसी परिवार को अपने हाथों से बनाये घरों में रहते देखता है, तो उसे अपार ख़ुशी होती है. उसे पता है, कि एक साफ़-सुथरा घर उसमें रहने वाले इंसान की इज़्ज़त को बरक़रार रखता है."
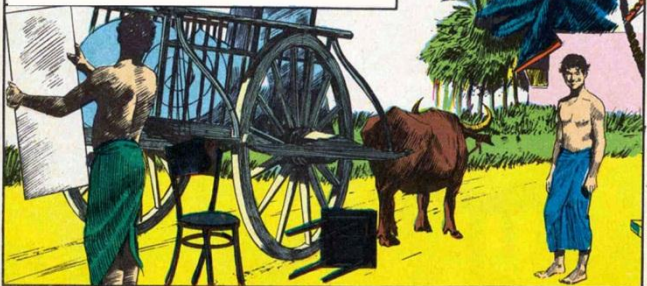
फ्रांकोइस के लिए जूते

फ्रांकोइस ने अपने नंगे पैरों को और बदन पर फटे हुए कपड़ों को देखा.
"पिताजी," उसने कहा, "मुझे स्कूल जाते हुए शर्म आती है. पूरे क्लास में मैं अकेला लड़का हूँ जिसके पास जूते नहीं हैं."
फ्रांकोइस के पिताजी ने उसकी पीठ थपथपाई.
"मुझे पता है बेटा," उन्होंने कहा, "यह हमारे लिए बड़ी मुश्किल घड़ी है. मैं अभी तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर पाऊंगा. हमारी ज़मीन बहुत अनुपजाऊ है. हाँ, एक दिन तुम्हारे पास, तुम्हारे भाई-बहनों, माँ और मेरे पास जूते ज़रूर होंगे. तुम थोड़ा धीरज रखो."
यह सुनकर फ्रांकोइस ने अपना निचला होंठ काटा.
फिर वो अपने घर की इकलौती खिड़की पर जाकर बाहर झाँकने लगा. उसका घर एक ढलवां पहाड़ी के ऊपर बनी एक झोपड़ी थी, जो हाइटी (Haiti) के फ़रमाथे जिले में थी. उसकी आँखें उस सड़क पर गईं जो उसकी गांव से पहाड़ी से नीचे हाइटी की राजधानी पोर्ट-ओ-प्रिंस जाती थी.
फ्रांकोइस को पता था कि उसका जिला बहुत गरीब था. उसके घर के आसपास दूर-दूर तक सभी पेड़ काटे जा चुके थे

हवा और बारिश मिट्टी को बहाकर ले गई थी, और अब वहां सिर्फ पत्थर ही दिखते थे.

उनके घर के पास की बंजर ज़मीन में सिर्फ मटर और केले ही उगते थे. फ्रांकोइस ने उन दोनों चीज़ों के अलावा शायद और कुछ खाया भी नहीं था. उसे अपने पिताजी के साथ रोज़ाना दो किलोमीटर पहाड़ी पर चलकर खेत की सिंचाई के लिए पानी लाना पड़ता था.

फ्रांकोइस ने अपने पिता से जूतों के लिए शिकायत करने के लिए माफ़ी मांगी. पर तब तक उसके पिताजी चले गए थे. फिर फ्रांकोइस को पथरीले बगीचे में कुदाल चलने की आवाज़ सुनाई दी. वो बाहर दौड़कर अपने पिताजी की मदद करने गया. फिर सूरज के समुद्र में ढलने तक वो खेत में मेहनत करता रहा.
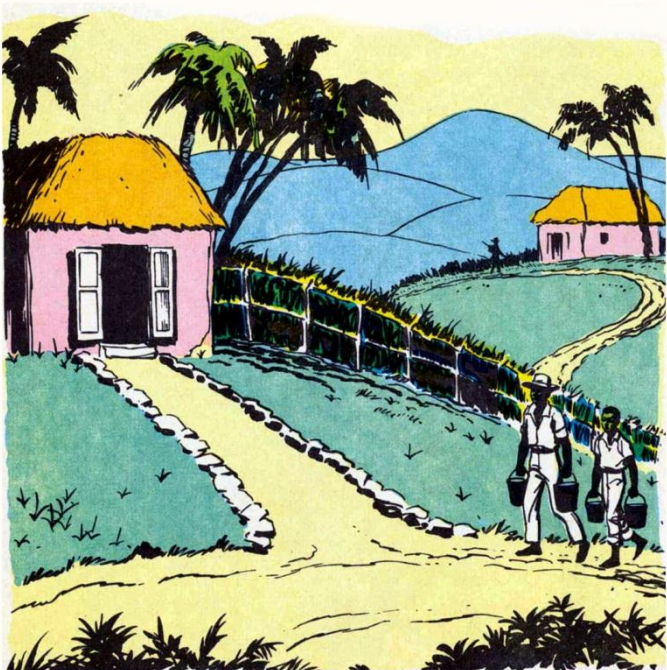
एक दिन जब फ्रांकोइस स्कूल से वापिस आया तो उसने कुछ अजनबी लोगों को अपने पिताजी से बातचीत करते हुए सुना. वो लोग विदेशी लग रहे थे.

"हम ज़रूर तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं," उनमें से एक आदमी ने कहा, "पर इसमें कुछ समय लगेगा. साथ में फेरमाथे के सभी किसानों का सहयोग भी लगेगा."

"मुझे पता नहीं," फ्रांकोइस के पिताजी ने कहा. "ऐसा लगता है जैसे ज़मीन की हमसे कोई दुश्मनी हो."

फिर पिताजी ने फ्रांकोइस की ओर देखा. "इधर आओ बेटा," उन्होंने कहा. "यह लोग एक दूर के देश बेल्जियम से आये हैं. इन लोगों को यूनाइटेड नेशंस ने भेजा है."

फ्रांकोइस को यूनाइटेड नेशंस के बारे में पता था. वो और उसके साथी अक्सर अपने टीचर से यूनाइटेड नेशंस के बारे में चर्चा करते थे.

"वे ज़रूर हमारी मदद करेंगे," फ्रांकोइस ने कहा.

बेल्जियम से आये लोग कृषि विशेषज्ञ थे. कुछ ही महीनों में उन्होंने फेरमाथे में एक "डेमोंस्ट्रेशन सेंटर" खोला. वहां उन्होंने किसानों को अलग-अलग प्रकार की सब्ज़ियां उगाने के तरीके सिखाये. फिर एक दिन फ्रांकोइस के पिताजी कुछ आलू के बीज लाए और उन्होंने उन्हें अपने खेत में बोया. उन्होंने बड़े प्रेम और सावधानी से उन पौधों की सेवा की. वो अन्य किसानों के समूह के सदस्य बने. वो एक कोआपरेटिव थी.

फिर पिताजी ने अपने घर के लिए एक नई छत बनाई, जिसे बनाने में फ्रांकोइस ने उनकी पूरी मदद की. छत टीन की चादरों की बनी थी, जिन्हें फ्रांकोइस के पिताजी को सरकार ने दिया था.
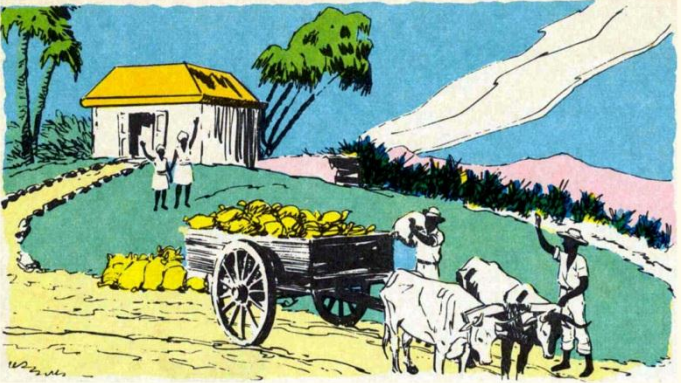
छत से एक नाली नीचे कंक्रीट की टंकी में जाती थी. इस तरह बारिश का पानी इकट्ठा होता था.

पहली आलू की फसल काटने के बाद फ्रांकोइस के पिताजी किसानों की कोआपरेटिव के अन्य सदस्यों के साथ पोर्ट-ओ-प्रिंस गए. वो अपने साथ बहुत से आलू के बोरे लेकर गए. फ्रांकोइस और उसकी माँ उन्हें खिड़की से तब तक देखते रहे जब तक वो आँखों से ओझल नहीं हो गए.

धीरे-धीरे सूरज करीबीएन समुद्र में डूब गया और रात हो गयी. अंत में फ्रांकोइस सोने चला गया. रात को उसने पिताजी को घर आते हुए नहीं सुना. अगले दिन सुबह के चमकीले सूरज ने फ्रांकोइस को उठाया.

दूसरे कमरे में फ्रांकोइस अपने माता-पिता को बातचीत करते हुए सुन सकता था. वे दोनों हंस रहे थे. बहुत दिनों बाद फ्रांकोइस ने अपने माँ-बाप को इस तरह ख़ुशी से हँसते हुए देखा था. .

फिर फ्रांकोइस पलंग पर उठकर बैठा और उसने अपने नंगे पैर फर्श पर रखे. उसने मेज़ पर अपने लिए एक पैंट और शर्ट देखी. ज़मीन पर उसके लिए एक जोड़ी जूते रखे थे जो पिताजी पोर्ट-ओ-प्रिंस से खरीद कर लाए थे

पजामा सफारी

हाल में बहुत देश स्वतंत्र हुए हैं. जब किसी देश को स्वतंत्रता मिलती है, तो वहां की सरकार यह जानना चाहती है कि उसकी सीमाओं में कितने लोग रहते हैं. सेन्सस से सरकार को न केवल आबादी की संख्या पता चलती है, पर उनकी शिक्षा और अन्य ज़रूरतों पर कितना खर्च होगा, इसका भी अनुमान मिलता है.

यहाँ पर यूनाइटेड नेशंस के एक एक्सपर्ट को जनगणना करने के लिए लिबिया भेजा गया. उन्होंने अपने अनुभवों को इन शब्दों में बयां किया :

"15 जनवरी, 1954 हमने बेनग़ाज़ी छोड़ा. मुझे रेगिस्तान में पहनने के लिए उपयुक्त कपड़े खरीदने का मौका नहीं मिला, इसलिए मैं सिर्फ अपने पजामे, बाथसूट और ऊनी सैंडल पहने था.
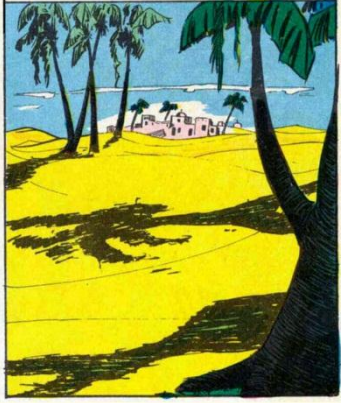
"हम एक नखलिस्तान (ओएसिस) पहुंचे. वहां हमें अपनी गलती का एहसास हुआ. नौ लोगों के लिए हम सिर्फ एक थाली और दो चम्मच लाये थे!
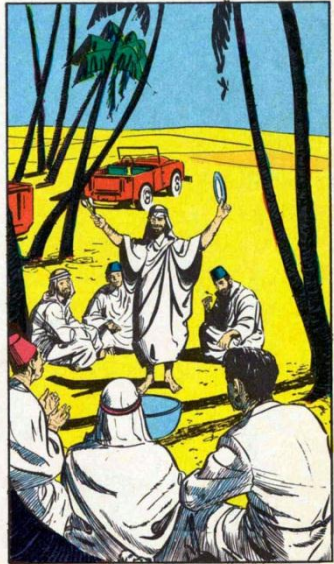
"उस रात मुझे सोने की तैयारी में कुछ देर नहीं लगी, क्योंकि मैंने पहले से ही अपना पजामा पहना था! मुझे रात को छह कम्बल ओढ़ने पड़े, क्योंकि रात को सहारा रेगिस्तान बेहद ठंडा हो जाता है.

"कई दिनों तक हम रेगिस्तान में यात्रा करते रहे. फिर 17 फरवरी को हम कुफ्रा पहुंचे. वहां पर पुलिस चीफ के साथ-साथ कई अधिकारीयों ने हमारा स्वागत किया.

"हमने उन्हें अपने आने का उद्देश्य बताया और फिर उनसे कहा कि वे हमें एक गाइड के साथ किसी दूर-दराज़ के गांव में भेजें.

"मैंने अभी-अभी कैदी से बात की है. वो आपकी मदद करने को तैयार है.
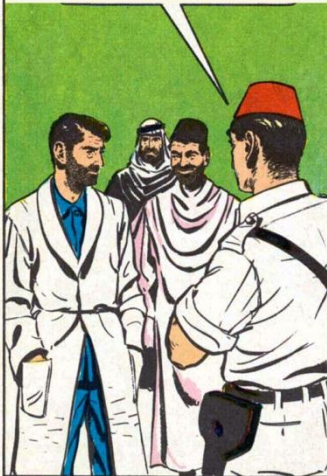
21 फरवरी को हम लोगों ने कुफ़्रा छोड़ा. अब हम कुल मिलकर 19 लोग थे. हमारी गाड़ियां लोगों, पानी, पेट्रोल और खाने से खचाखच लदी थीं.

मैंने अपने गाइड से पूछा कि हम अपनी मंज़िल से कितनी मील दूर थे.

अगले दिन हम मुलायम रेत में फंस गए. फिर हमें उतरकर अपनी गाड़ियों को पीछे से धक्का देना पड़ा

"शाम तक हम एक नखलिस्तान (ओएसिस) में पहुंचे. रेत के एक भीषण तूफ़ान के कारण हमें अगले पूरे दिन वहीं रहना पड़ा.
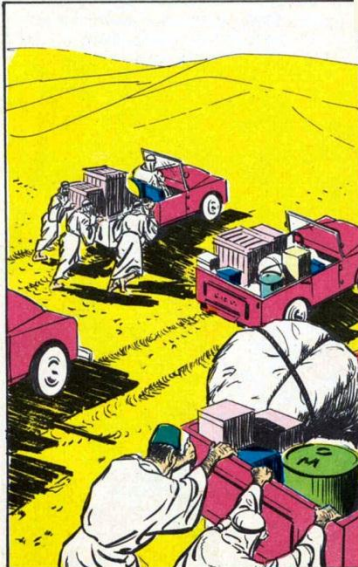
वहां से चलने के बाद हम एक बेहद
पथरीले इलाके में पहुंचे. वहां पर
चलते-चलते हमारी कुछ गाड़ियां
खराब हो गईं. हमें उन्हें छोड़ना पड़ा.
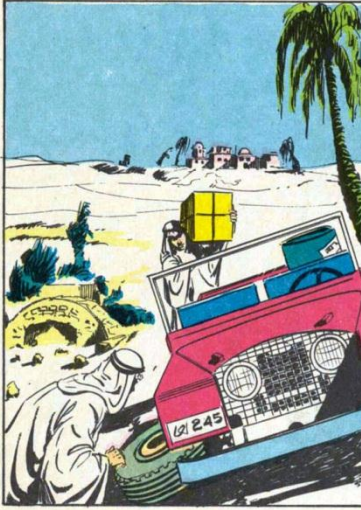
फिर हम पथरीले पहाड़ों पर पहुंचे.
वहां पर कोई सड़कें नहीं थीं.
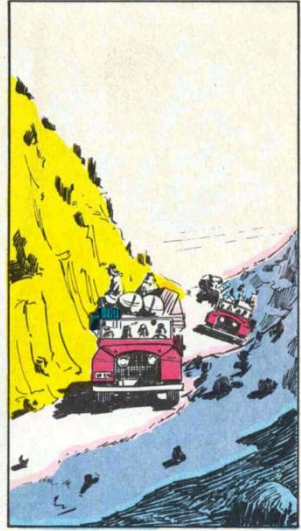
हमारी गाड़ियां बहुत मुश्किल से आगे
बढ़ रही थीं. हम लोग गाड़ियों के पीछे
पहाड़ के किनारे धीरे-धीरे चल रहे थे.

27 फरवरी को हमारा सारा पानी ख़त्म
हो गया. पर हमारे साथियों ने अपना
हंसी-मज़ाक ज़ारी रखा. अगले दिन
हम एक नखलिस्तान पहुंचे.

जिस गांव में हमें जाना था, वो वहां से नज़दीक था. वहां के लोग एक लाइन में खड़े हुए और हमने उनकी गिनती की. उन्होंने मेरे प्रश्नों का उत्तर भी दिया.

लौटते वक्त हमारी एक और गाड़ी खराब हो गई. हमें उसे भी छोड़ना पड़ा.

अंत में हम कुफ्रा वापिस पहुंचे. 14 मार्च की सुबह को मैं बेनग़ाज़ी में अपने होटल में लौटा.
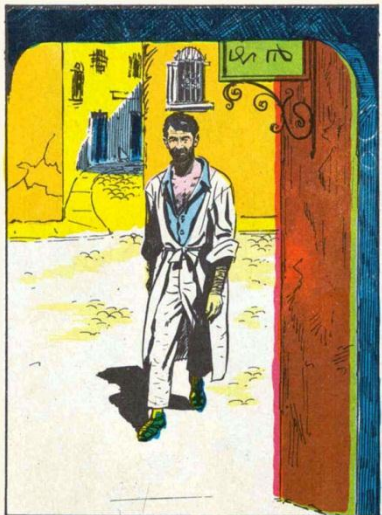
"क्योंकि मैं अभी भी अपना पाजामा पहने था, मैं सीधे जाकर पलंग पर लेट गया. रेगिस्तान में यात्रा की परेशानियों के बावजूद मुझे बेहद नायब अनुभव हुए. उनका मैं शुक्रगुज़ार हूँ."

शेवाकी के बुज़ुर्ग

अफगानिस्तान चारों तरफ पहाड़ों से घिरा है. पिछले कुछ सालों में ही इस देश के लोगों का बाकी दुनिया से सम्बन्ध हुआ है.
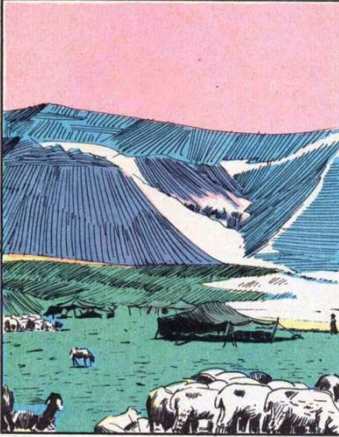
शहरों के आधुनिकरण के लिए अफ़ग़ान सरकार ने यूनाइटेड नेशंस से मदद मांगी
भारत में एक कम्युनिटी डेवलपमेंट एक्सपर्ट हैं, जिन्हें इस काम के लिए उपयुक्त समझा गया.
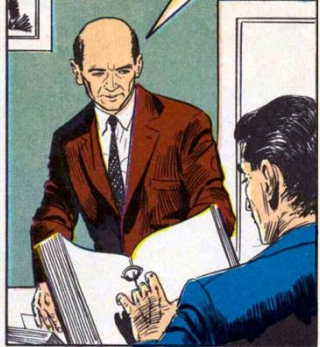
वो एक्सपर्ट काबुल - अफगानिस्तान की राजधानी पहुंचे और वहां पर अधिकारियों से मिले.
आप शेवाकी जाएँ. हम उसे एक "मॉडल विलेज" के रूप में विकसित करना चाहते हैं.
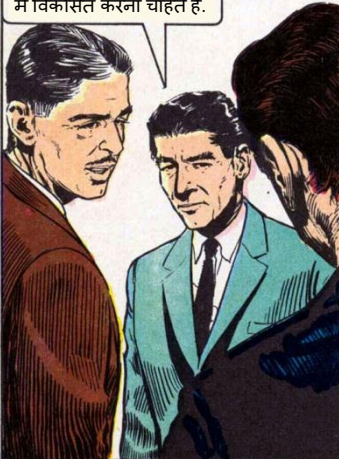
वहां के बुज़ुर्ग लोग अपने पुराने तरीकों को नहीं छोड़ते हैं. इसलिए आपका काम बहुत मुश्किल होगा.

कुछ दिनों के बाद वो एक्सपर्ट कुछ
अधिकारियों के साथ शेवाकी पहुचे.
वहां की आबादी केवल 800 की थी.
ज़्यादातर लोग किसान थे.

वहां जाकर एक्सपर्ट और
अधिकारी गांव के बुज़ुर्गों से मिले.

बुज़ुर्गों ने यह बात नहीं मानी. उसके बाद मीटिंग समाप्त हो गई.

अगले दिन दूसरी बैठक हुई. इस बार बुज़ुर्गों के साथ-साथ कई पुजारियों, स्कूल शिक्षकों और ज़मीन मालिकों ने भी मीटिंग में हिस्सा लिया
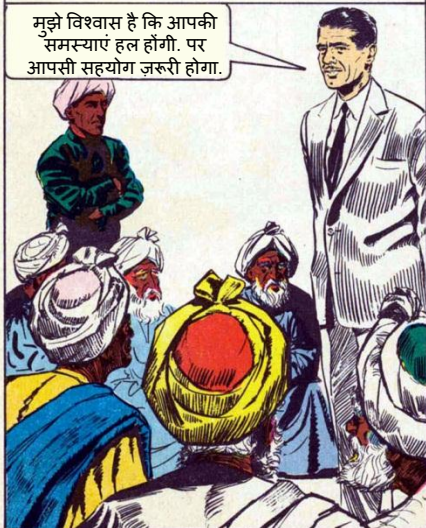
काफी चर्चा के बाद के बुज़ुर्ग ने गांववालों की तरफ से उत्तर दिया.

बुज़ुर्गों ने एक्सपर्ट और अधिकारियों के साथ मिलकर काम करने के लिए एक समिति बनाई.

अब हम काम शुरू कर सकते हैं. शेकावी के लोग काम ख़त्म होने पर खुश होंगे, क्योंकि वो काम उन्होंने खुद किया होगा.
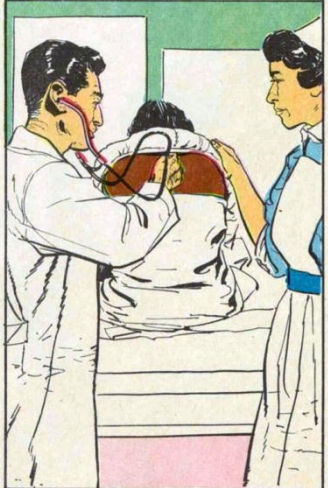
कमेटी ने एक और मकान चुना और उसे "शिक्षा केंद्र" बनाया.
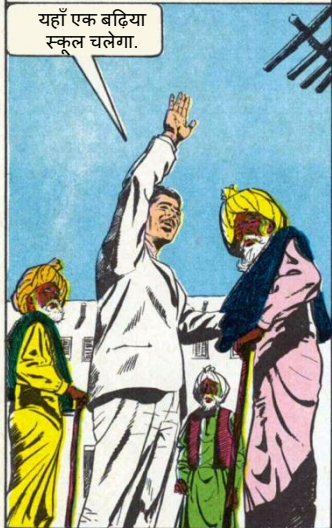
शेकावी से काबुल जाने वाली सड़क को तुरंत मरम्मत की ज़रुरत थी.
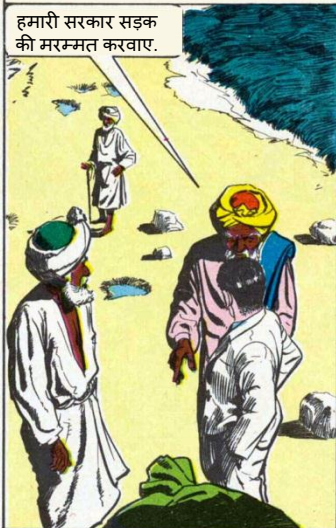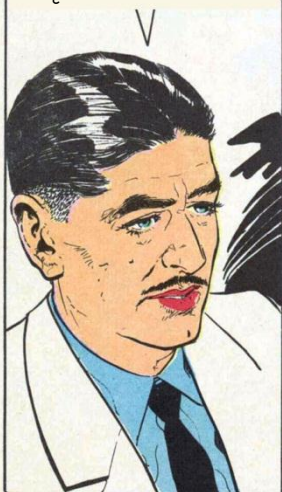
अगले दिन सैकड़ों गांववाले अपने-अपने गधों के साथ वहां आये. वो पास की पहाड़ी से बजरी लाये.

कुछ हफ़्तों में सड़क की अच्छी मरम्मत हो गई. तब बुज़ुर्गों के दिमाग में एक विचार आया.
काबुल से बस तभी आती है जब ड्राइवर का मन करता है. नियमित बस सर्विस से शेकावी को बहुत लाभ होगा.
हम बस कंपनी को इसके बारे में लिखें! मांग करें?
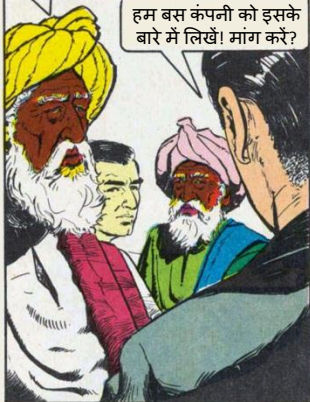
एक महीने बाद .....
बस दिन में दो बार आती है!

कुछ दिनों बाद अन्य गावों के बुज़ुर्ग भी, शेकावी में होने वाली तरक्की को देखने आये.
हम भी "स्वस्थ्य केंद्र" और स्कूल बनाएंगे.

क्या सरकार या फिर यूनाइटेड नेशंस ने यह सब आपके लिए किया?
नहीं. उन्होंने बस रास्ता दिखाया. इसे गांव के लोगों ने खुद मिलकर किया. अगर आप खुद करते हैं तभी प्रगति होती है.

दुनिया के सब बच्चे
यह सुनिश्चित करने के लिए कि दुनिया एक खुशहाल और उम्मीद की जगह हो, रोज़ाना अच्छे नेक लोग छोटे बच्चों के साथ काम करते हैं. बच्चों की सेहत और उनकी खुशहाली को सुनिश्चित करना UNICEF (यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेन्स फण्ड) यूनीसेफ का काम है. यूनीसेफ ने करोड़ों बच्चों को टीका लगाकर उन्हें बीमारियों से बचाया है. लाखों-करोड़ों बच्चों को भूख से मरने से बचाया है. यूनीसेफ हर महीने बीस लाख से अधिक बच्चों - लड़कों और लड़कियों तक पहुँचता है. इस कार्य में यूनीसेफ की मदद यूनाइटेड नेशंस और अन्य देश करते हैं. यूनीसेफ को यूनाइटेड नेशंस के बजट से पैसा नहीं मिलता है. यूनीसेफ को लोग और सरकारें स्वेच्छा से पैसा देते हैं. यूनीसेफ ग्रीटिंग कार्ड्स बेंचकर भी कुछ पैसा इकट्ठा करता है. यूनीसेफ, भारत में किस तरह से काम करता है उस कहानी को यहाँ एक भारतीय महिला हरजिंदर बता रही हैं.

मैं नई दिल्ली के पास एक फार्म पर बड़ी हुई. मेरा बचपना काफी खुशहाल था. अक्सर मेरे साथियों के पास खाने को बहुत कम होता था.
अरे अब्दुल. इसे खाने में मेरी मदद करो.

"एक दिन माता-पिता ने पूछा कि मैं बड़ी होकर क्या बनना चाहती हूँ.
मैं बड़ी होकर नर्स बनूंगी.

पिताजी ने इसपर आपत्ति जताई.
नर्स! हरजिंदर वो अच्छा पेशा नहीं होगा. अगर तुम नौकरी करोगी तो कोई भी तुमसे शादी नहीं करेगा.

"बाद में मैंने माता-पिता को चर्चा करते सुना.
उसे अपने सपनों को जीने दो, पतिदेव. यही वो स्कूल में सीखती है. जब वो बड़ी होगी तो उसे खुद समझ में आ जायेगा कि हमारे जिले में नर्सिंग की पढ़ाई की कोई सुविधा ही नहीं है.
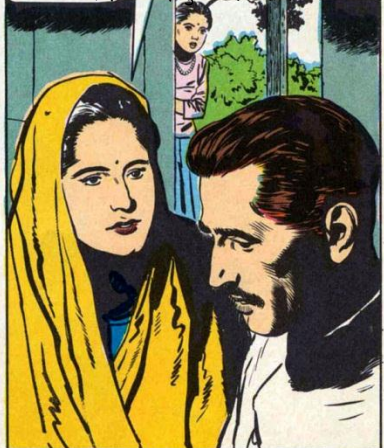
"फिर साल बीतते गए और मैं सत्रह साल की हुई. माँ ने ठीक ही कहा था, मेरे नर्स बनने का चांस बिल्कुल न के बराबर था.
देखो, नर्सिंग की पढ़ाई के लिए हमें उपकरण, प्रशिक्षित टीचर और जगह चाहिए. हमारे पास कुछ भी नहीं है.

"फिर एक दिन पिताजी ने मुझे एक खुशखबरी सुनाई.
बेटी, तुमने पक्का मन बनाया था. तुम जीतीं.

सुना है पतझड़ में नई दिल्ली में एक स्कूल नर्सिंग का कोर्स पढ़ायेगा. तुम चाहो, तो वहां पढ़ो.

"उसके बाद मैंने लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल में दाखिला लिया. मेरे साथ अन्य लड़कियां भी थीं. हमारी सुपरवाइजर ने हमें कोर्स के बारे में बताया.
चमत्कारिक बात है. पर यूनीसेफ हमें उपकरण और टीचर दे रहा है.
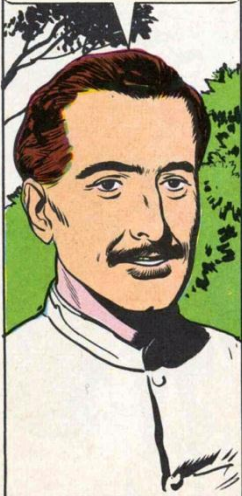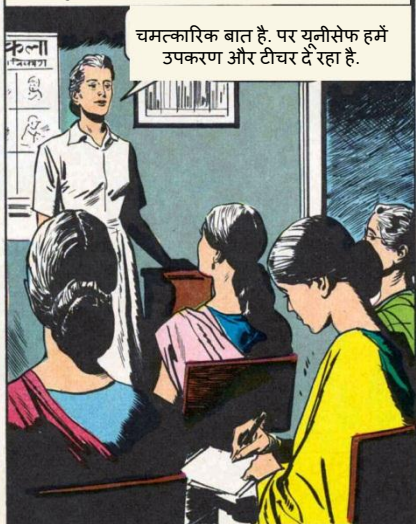
"नर्सिंग स्कूल में मैंने कई चौकाने वाली बातें सीखीं.
भारत में आधी मौतें ऐसे बच्चों की होती हैं जिनकी उम्र दस साल से कम होती है.

अन्धविश्वास के कारण. कुछ लोग मानते हैं कि दरवाज़े पर हथेली के ठप्पे लगाने से बच्चे बीमारियों से बच जायेंगे.

"अंत में मेरे ग्रेजुएशन का दिन आया.
हमें तुम पर बहुत गर्व है हरजिंदर. क्या तुम अब नई दिल्ली के किसी अस्पताल में काम करोगी?

नहीं. मैं एक ग्रामीण इलाके में जाकर काम करूंगी. पच्चीस हज़ार लोगों के बीच में मैं अकेली प्रशिक्षित नर्स होऊंगी.

"कुछ हफ़्तों बाद मैं अपने कार्यस्थल पहुंची. उस छोटे स्वास्थ्य केंद्र के एक डॉक्टर को मरने की फुर्सत नहीं थी.
मैं चाहता हूँ कि आप कुछ देर आराम करें और चाय पियें. पर समय ही नहीं है. क्या आप पट्टी बांधना शुरू करेंगी?
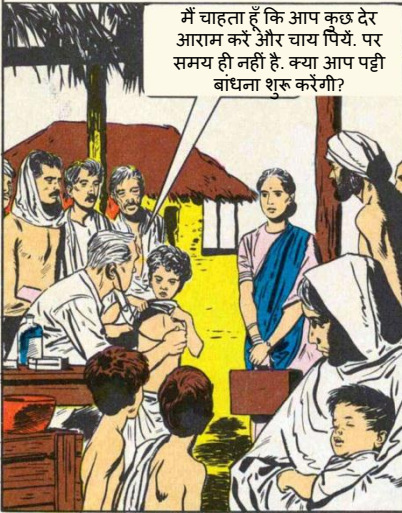
चार दिन बाद ही हमने एक-साथ चाय पी. डॉक्टर ने मुझे अपने काम के बारे में बताया.
यहाँ पर लोग मानते हैं कि चावल को किसी एक पेड़ के रस में पकाने से बच्चों का क्षयरोग ठीक हो जाता है.

हर सात सेकंड में दुनिया में कोई न कोई इंसान क्षयरोग से मरता है. यहाँ लोगों में अज्ञानता, गंदगी और अन्धविश्वास भरा है.

"एक दिन हमें एक अच्छी खबर मिली.
यूनीसेफ की टीम जिले में बच्चों को क्षयरोग का टीका देने आ रही है!
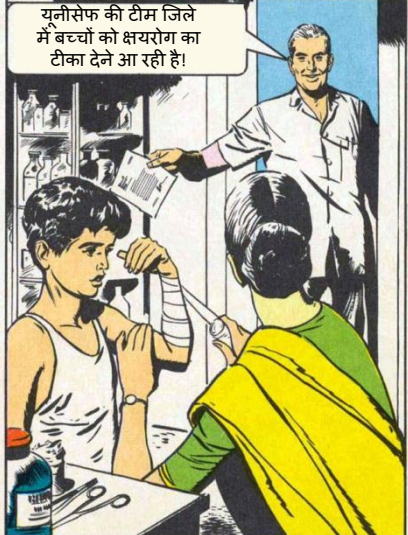
"पांच डॉक्टर्स की टीम आई. कुछ दिनों ने उन्होंने लोगों से चर्चा की - खासकर मांओं से.
हम बच्चों को जो दवा देंगे उससे कोई तकलीफ नहीं होगी. भारत क्षयरोग ख़त्म करना चाहता है. आप इसमें मदद करें.
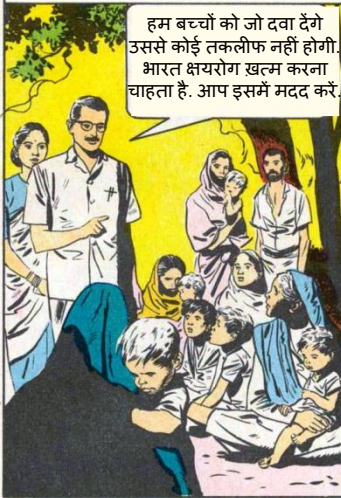
"जिस दिन टीके दिए जाने थे उस दिन पेड़ों की छाँव के नीचे मेज़ों को सजाया गया.
कोई भी दिखाई नहीं दिया है. पर अभी दस मिनट बाकी हैं.

"फिर....
लोग आ रहे हैं! हमारी जीत हुई!

सैकड़ों बच्चों को टीका दिया गया.

"अब मेरे जिले के सभी बच्चे क्षयरोग से सुरक्षित होंगे. पर अभी भी बहुत काम बाकी है. एक दिन मैं एक नए जन्मे बच्चे, उसकी माँ और दादी से मिलने गई.

"माँ, बच्चे को लेकर काफी चिंतित थी.
मेरी बच्ची अभी सिर्फ दो हफ्ते की है. क्या वो बड़ी होकर स्वस्थ्य बनेगी?

तभी बीच में दादी ने टोका...
बच्चों को प्याज के पानी में निहलाना चाहिए. उससे वे स्वस्थ बनते हैं.

युवा माँ ने बूढ़ी औरत की ओर देखा. उसे समझ नहीं आया कि वो मेरी बात माने या बूढ़ी औरत की.
अगर बच्चे के पलंग के नीचे चाकू रखा जाए तो फिर प्रेतात्माएं उसे परेशान नहीं करेंगी.

"फिर अचानक युवा माँ ने बच्ची को उठाकर मुझे थमा दिया. यह मेरे लिए बड़ी जीत थी.
नए तरीके मेरी बेटी के लिए सबसे अच्छे होंगे.
तुम्हारा सोच ठीक हैं. अब मुझे बच्ची को गर्म पानी से निहलाने दो.

"कुछ समय बाद, यूनीसेफ द्वारा प्रशिक्षित कई और नर्सें मेरे जिले में आयीं. अब जिले में कई और डॉक्टर्स भी हैं, जिनमे एक मेरे पति हैं.

"यूनीसेफ, सरकार के सहयोग से बच्चों के लिए दूध भेजती है. उसे लेने के लिए बच्चे हमारे क्लिनिक में आते हैं.
UNIC
DONATED
OF THE UN
AMERICA

काम ज़ारी है. धीरे-धीरे हम अंधविश्वास को जीत रहे हैं. हमारी सबसे बड़ी कमाई और ख़ुशी बच्चों के चेहरों की मुस्कान है. "

यूनाइटेड नेशंस की कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती है. वो ज़ारी रहती है. हर समय यूनाइटेड नेशंस की कोई न कोई एजेंसी, कहीं न कहीं किसी इंसान की मदद कर रही होती है.
तकनीकी जानकारी के आदान-प्रदान से गरीब और कम विकसित देश खुद को बदल रहे हैं और अपनी खेती और उद्योगों का विकास कर रहे हैं.

डॉक्टर्स और नर्सों की टीम्स बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए काम कर रही हैं. कुछ साल पहले तक लोगों ने टीकों और अस्पतालों के बारे में नहीं सुना था.

टीचर्स को प्रशिक्षित किया जा रहा है और नए स्कूल बनाये जा रहे हैं जिससे सभी बच्चे स्कूल जा सकें. क्योंकि आने वाले भविष्य का निर्माण आज के लड़के-लड़कियां करेंगे.

देश, एक-दूसरे का कला और विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं.
यूनाइटेड नेशंस की जनरल असेंबली में दुनिया के सभी देश एक-सामान ज़मीन पर मिलते हैं और दुनिये के मुद्दों पर चर्चा करते हैं.

यूनाइटेड नेशंस की सिक्योरिटी कौंसिल, दुनिया में अमन और शांति बनाए रखने के लिए सतत काम करती है. वो दुनिया के हरेक कोने पर अपनी नज़र रखती है. जहाँ कहीं लड़ाई होती है, वहां पर सिक्योरिटी कौंसिल प्रयास करती है कि लोग लड़ने-मरने की बजाये अपनी समस्याओं को बातचीत के ज़रिये शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाएं.

यूनाइटेड नेशंस की कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती. लोगों की मदद का काम और शांति बनाये रखने का काम लगातार ज़ारी रहता है. लोगों की मदद के साथ-साथ दुनिया में शांति भी ज़रूरी है.

अंत